डॉ·शिवाजी विष्णू निकम
एम्·ए·,पीएच्·डी·
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक
हिन्दी विभाग,
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा·
(महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ·शिवाजी विष्णू निकम, स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक, हिन्दी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि, कु·शबनम अजीज मुल्ला ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल्·(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध **"दिनेश नन्दिनी डालमिया के "हिरण्यगर्भा" का मूल्यांकन"** मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। कु·शबनम अजीज मुल्ला के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ। सम्पूर्ण लघु-शोध-प्रबंध को आरम्भ से अन्त तक पढ़कर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ।

सातारा
दिनांक : 21-12-96

डॉ·शिवाजी विष्णू निकम
शोध-निर्देशक के हस्ताक्षर

अ नु शं सा

हम संस्तुति करते हैं कि, कु·शबनम अजीज मुल्ला द्वारा प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध - "दिनेश नन्दिनी डालमिया के "हिरण्यगर्भा" का मूल्यांकन" परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाय।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध कला विद्या शाखा के अन्तर्गत हिन्दी विषय से संबंधित आधुनिक काव्य विधा में सन्निविष्ट है।

प्रा·जयवंत जाधव
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा·

L. B. S. COLLEGE SATARA

पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा

सातारा
दिनांक : 28.12.96

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – ४१६ ००४

दिनेश नन्दिनी डालमिया के "हिरण्यगर्भा" का मूल्यांकन

प्र स्या प न

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्·के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

SAMULLA

सातारा

दिनांक : 28-12-96

कु·शबनम अजीज मुल्ला

शोध-छात्रा के हस्ताक्षर

भू मि का

बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न साहित्यिका श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया ने यद्यपि साहित्य के सभी कविता, उपन्यास, कहानी, यात्रावृत्त, आलोचना आदि अंगों पर कुशलता से अपनी लेखनी चलाई हैं, पर श्रीमती दिनेश नन्दिनी ने अपना आरम्भिक सृजन गद्य-गीतों से ही प्रारम्भ किया है और गद्य-गीत ही शीर्ष पर हैं।

श्रीमती दिनेश नन्दिनीजी का जन्म एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार मे हुआ और उनके व्यक्तित्व के मूल संस्कार भी उसके अनुरूप ही हैं। दिनेश नन्दिनीजी के बचपन में सामाजिक स्थिति कुछ इसप्रकार थी कि प्रायः लड़कियों को स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं भेजा जाता था। अतः इनकी भी दसवीं तक की शिक्षा अव्यवस्थित ही रही। लेकिन श्रीमती दिनेश नन्दिनी के पिता सुशिक्षित प्राध्यापक होने के कारण उनकी स्वाभाविक इच्छा थी कि, उनकी बेटी की शिक्षा भी सुव्यवस्थित हो। इसप्रकार उनके पिता की नियुक्ति नागपुर के एक कॉलेज में हो गई, और वहाँ जाकर दिनेश नन्दिनी ने मैट्रिक की परीक्षा पास की और बाद में उन्होंने कॉलेज में प्रवेश लिया। इसतरह दिनेश नन्दिनी ने अपनी शिक्षा पूरी की।

सन 1946 में श्रीमती दिनेश नन्दिनी का विवाह सेठ रामकृष्ण डालमिया के साथ हो गया। उन दिनों श्रीमती डालमिया के पति भारत के उन उच्चतम उद्योगपतियों में से एक थे जो अपने देश के विभिन्न व्यापारिक, आर्थिक और राजनैतिक गतिविधियों के प्रमुख आकर्षण केन्द्र थे। वस्तुतः दोनों के जीवन-मूल्यों में इतना अन्तर था कि विवाह के कुछ वर्ष बाद ही दोनों के सम्बन्धों में दूरी आने लगी थी। सच तो यह है कि श्रीमती दिनेश नन्दिनी उनके पति की छठीं और सबसे छोटी पत्नी थी इसलिए विवाह से पूर्व उन्होंने अपने पति में जिस पूर्ण पुरुष

की कल्पना की थी वह पूरी होना असंभव था। विवाह से पूर्व भी एक प्रेमसम्बन्ध में उन्हें निराशा मिल चुकी थी। विवाह के बाद भी दिनेश नन्दिनी प्रेम की प्राप्ति में असफल रही - उनकी यहीं निराशा और अतृप्त प्रेम की भावना ही उनकी सतत साहित्य साधना का मूल है और उसमें सर्वत्र परिव्याप्त भी। यही कारण है कि श्रीमती दिनेश नन्दिनी के "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह के सृजन के पीछे होने वाली प्रेरणा को जानने की इच्छा मेरे मन में उत्पन्न हुई। यों तो उनके साहित्य को लेकर कुछ आलोचनात्मक पुस्तकें तैयार हुई हैं, लेकिन "उनके "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह के सृजन के पीछे कौनसी प्रेरणा हैं" इसे आज तक किसी ने स्पष्ट नहीं किया है और किसी भी साहित्यकार के साहित्य का मूल तब तक नहीं किया जा सकता कि जब तक उसके निर्माण के मूल में कार्य करने वाले एवं निर्माण के लिए प्रेरणा देने वाले तत्वों को स्पष्ट नहीं किया जाता। अतः मुझे इस बात का आनंद हो रहा है कि मैंने श्रीमती दिनेश नन्दिनी के "हिरण्यगर्भा" काव्य के सृजनात्मक मूल्यांकन पर लघु-शोध-प्रबंध के द्वारा शोध-कार्य किया है। श्रीमती दिनेश नन्दिनी जैसे श्रेष्ठ आधुनिक एवं प्रगतिशील कवयित्री के काव्य का सृजनात्मक मूल्यांकन आज तक किसी ने नहीं किया। कई ग्रंथों में उनके काव्य पर जरूर कुछ लिखा गया है, लेकिन डा॰अर्चना चतुर्वेदी यादव द्वारा सम्पादित "दिनेश नन्दिनी डालमिया : कृतित्व के विविध आयाम" ग्रंथ को छोड़कर उनके काव्य पर स्वतंत्र रूप से कोई काम नहीं हुआ है। डा॰चतुर्वेदी के ग्रंथ में भी उनके सृजनात्मक मूल्यांकन पर संक्षेप में ही लिखा है। अतः दिनेश नन्दिनीजी के "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह का सृजनात्मक मूल्यांकन करना मैंने अपना परम कर्तव्य समझा।

आज जब हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में नये कवि, कवयित्रीयों के काव्य निर्माण हो रहे हैं और अपने काव्य को प्रखर बनाने के लिए कोरी भावुकता तथा नग्न यथार्थता को अपनाया जा रहा है, तब मौलिक रचनाओं के निर्माण की मूल प्रेरणा को उजागर करना महत्वपूर्ण लग रहा है। श्रीमती दिनेश नन्दिनी जैसे अनुभवसिद्ध कवयित्री के "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह का सृजनात्मक मूल्यांकन करना अनिवार्य बन गया है। इस कार्य में मेरा यह लघु-शोध-प्रबंध एक प्रयास मात्र

रहा है।

मैंने अपने लघु-शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। मेरे शोध-प्रबंध का प्रथम अध्याय "दिनेश नन्दिनी डालमिया : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" है। इसमें दिनेश नंदिनी का जन्म तथा जन्म स्थान, माता-पिता, विवाह एवं संतान, शिक्षा, साहित्यिक व्यक्तित्व, स्वभाव विशेष, सम्पर्क, सम्मान, जीवन की ओर दृष्टिपात और उनके सम्पूर्ण कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय में दिनेश नन्दिनी के "हिरण्यगर्भा" काव्य का सामान्य परिचय स्पष्ट किया है। तृतीय अध्याय में "हिरण्यगर्भा" के कविताओं में कथ्य चेतना कौनसे हैं, इसका विश्लेषण किया है। चतुर्थ अध्याय में "हिरण्यगर्भा" के शिल्प विधान को स्पष्ट किया है और पंचम अध्याय में उपसंहार रूप में दिनेश नन्दिनी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा हिरण्यगर्भा काव्य का मूल्यांकन किया गया है।

कृतज्ञता-ज्ञापन

सर्वप्रथम मैं श्रद्धेय डा·नैकमजी की आभारी हूँ, क्योंकि उनके निर्देशन में प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को प्रारम्भ, विकास और परि-समाप्ति मिल सकी है। अपने कार्य में हमेशा व्यस्त रहने के बावजूद भी आपने निरन्तर मार्गदर्शन किया है।

लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ·गजानन सुर्वेजी तथा प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ और विशेष रूप से मैं शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापुर के हिन्दी विभाग अध्यक्ष डा·पी·एस·पाटील जी का आभार मानती हूँ। वे अपनी साहित्यिक प्रवृत्तियों में व्यस्त रहते हैं, परन्तु मेरी समस्यायें सुलझाने में वे सदा प्रयत्नशील रहे हैं।

इस शोध-कार्य में मुझे महत्वपूर्ण सहायता करने वाले प्रा·प्रशांत नलवडेजी का आभार व्यक्त करते हुए मैं संतोष का भाव अनुभव करती हूँ, इनकी सहायता से ही मैं अपना कार्य पूर्ण कर सकी हूँ।

इस शोध-कार्य के लिए मैं अपने माता-पिता के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ और बड़े भाई, छोटे भाई तथा मेरी छोटी बहन इन्होंने मुझे विशेष सहायता दी है। अतः मेरे शोध-कार्य में ये बराबर के हिस्सेदार हैं।

मैं उन कवियों, लेखकों तथा आलोचकों, विद्वानों का भी सविनय आभार मानती हूँ कि जिनकी रचनाओं एवं शोध-ग्रंथों से मैंने किसी-न-किसी रूप से सामग्री ग्रहण की है।

इस लघु-शोध-प्रबंध का सुचारू रूप से और अत्यंत तत्परता से टंकन-लेखन करने वाले "रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा" के श्री·मुकुन्द ढवलेजी तथा उनके सहयोगी श्री·सुशीलकुमार कांबले, राजू कुलकर्णी इनके प्रति भी मैं आभारी हूँ।

कु·शबनम अजीज मुल्ला
शोध-छात्रा